लखनऊ से प्रकाशित राष्ट्रीय हिन्दी साप्ताहिक
website: www.pawanprawah.com

पवन प्रवाह

सत्य का प्रवाह सतत् प्रवाह
डाक पंजीयन संख्या GPO LW/NP-106/2015-17
वर्ष 03 अंक 42 लखनऊ। सोमवार 10 से 16 जुलाई-2017
e-mail-pawanprawah@gmail.com
मूल्य : तीन रुपये पृष्ठ-16

प्राणिक ऊर्जा : कैसे करें चक्रों को जाग्रित

लेखक डॉ. भरत राज सिंह
स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज के महानिदेशक एवं वैदिक विज्ञान केन्द्र के अध्यक्ष हैं

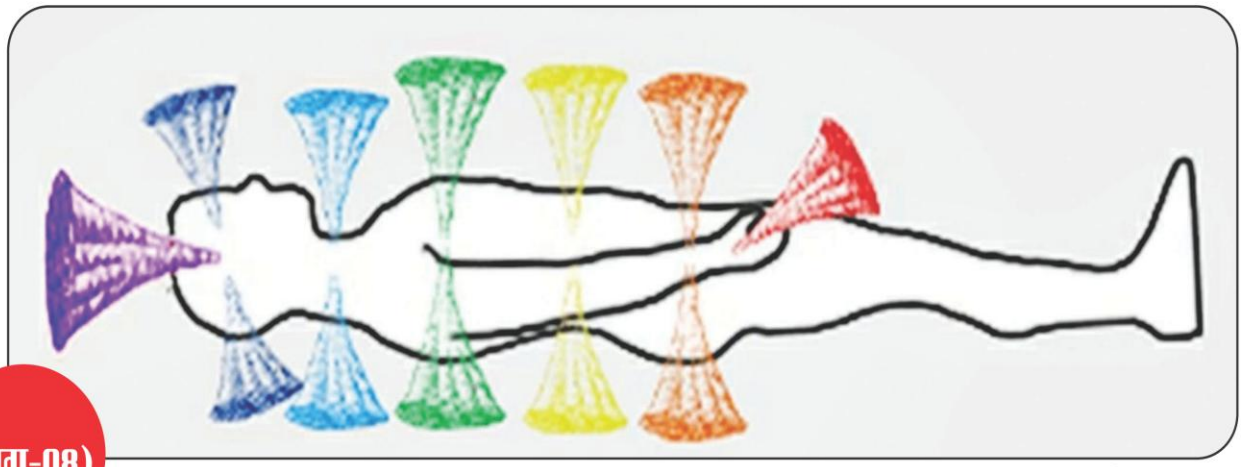

(भाग-08)

पिछले 7 (सात)-अंकों में हमने भौतिक शरीर में ऊर्जा का संचार व उससे उत्पन्न ऊर्जा (आभा), जो भौतिक शरीर के कुछ क्षेत्र तक प्रभावी रहती है तथा प्राण के स्रोत, रंग प्राण व उसमें मुख्यतः प्राणिक ऊर्जा (शक्ति) किसे कहते हैं व क्या लाभ हैं, भौतिक शरीर मे चक्रों का क्या महत्व है व इससे शरीर की ऊर्जा का संतुलन कैसे प्रभावी होता है, उर्जा (आभा) के परत, उनका महत्व और उससे शारीरिक स्वास्थ्य में, क्या लाभ होगा, तथा शारीरिक रोगों के निदान में प्राणिक उपचार (हीलिंग), ऊर्जा कैसे अपने शरीर मे बुलाये, उसकी क्या विधि है, ऊर्जा को बुलाने अथवा संग्रह के उपरान्त कैसे अनुभव होता है, की जानकारी दी गयी थी। इस अंक में, शरीर के मुख्यकेन्द्रों में ऊर्जा के सात चक्रों को जाग्रित करने के बारे में बताया गया है।

8.0 ऊर्जा की चक्र प्रणाली: ऊर्जा उपचार के रूप में जब आप काम करते हैं, तो आपको समझना है कि आपके मरीज का चक्र आपके उपचार का केंद्रबिन्दु है, क्योंकि शरीर मे यह चक्र बहुत महत्वपूर्ण हैं। यह भी स्पष्ट है कि जब आप उन पर ऊर्जा प्रवाह का कार्य शुरू करते है तब अपने हाथों को, उन चक्रों पर गुजारते हुए अपनी स्थिति को समझना शुरू कर देते है कि यह क्रिया कहां-कहां उपचार के लिए लाभप्रद है।

मानव शरीर से जुड़े हुए प्रमुख सात चक्र हैं और इसके अतिरिक्त बहुत से छोटे-छोटे चक्र हैं जो बहुत कम महत्वपूर्ण हैं। ग्रैंड मास्टर चाओ काक सुई ने भी केवल प्रमुख सात चक्रों पर मूलतः ध्यान देने को बताया है। ये प्रमुख चक्र वास्तव में 'ऑब्जेक्ट्स' के रूप में मौजूद नहीं हैं परन्तु ऊर्जा पैटर्न हैं और शरीर के कुछ विशिष्ठ स्थानों पर मौजूद हैं जिनमें पांच-रीढ़ की हड्डी के साथ और दो-सिर पर उपलब्ध होते हैं। ऊर्जा के प्रत्येक चक्र-एक फनल के आकार या भंवर की तरह का होता है। उनके चक्रवाती बिन्दु (vortices) शरीर के अंदर, रीढ़ की हड्डी के साथ-साथ, जो एक केंद्रीय ऊर्जा चैनल की तरह काम करती है, सिर तक स्थित होती है। सात चक्रों में से, प्रत्येक में एक सामने (आमतौर पर प्रमुख) घटक और एक पीछे (आमतौर पर कम प्रभावशाली) घटक होते हैं, जो एक-दूसरे से अच्छी तरह से सम्बन्ध रखते हैं। हालांकि 1 और 7 चक्र आमतौर पर प्रमुख घटक का प्रतिनिधित्व करते हैं और उनमे से केवल एक को प्रभावी होने के बारे में विचार किया जाता हैं, क्योंकि इन दो चक्रों में कमजोर घटक की तुलना में पहला अधिक महत्वपूर्ण माना गया है क्योंकि दूसरा पहले से बहुत दूर होता है। सातवां चक्र सिर के ऊपर खड़े रूप में फैला हुआ होता है। पहला चक्र रीढ़ की हड्डी के नीचे से और नीचे की ओर 30 से 45 डिग्री के कोण पर आगे बढ़ाता है, यद्यपि इसकी वास्तविक स्थिति प्रत्येक व्यक्ति के लिए भिन्न होती है और प्रायः पैरों की ओर नीचे की तरफ बढ़ने लगता है। दूसरे पांच चक्र जो 1 और 7 के बीच स्थित हैं वे अपने उपयुक्त स्थानों पर शरीर के सामने को विस्तार करने वाला एक सामने का घटक और शरीर के पीछे को विस्तार करने वाला एक पीछे के घटक को दर्शाता है।

चक्र प्रणाली: इन सात प्रमुख चक्रों या प्राथमिक ऊर्जा केंद्रों में से प्रत्येक का अपना स्वयं का चरित्र है और हमारे अस्तित्व का एक अनूठा पहलू है-जिसमें से पहले चक्र से जीवन शक्ति या अस्तित्व और सतावे चक्र से अस्तित्व का समग्रता या आध्यात्मिक पूर्णता की पहचान होती है जिसे शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता है बल्कि इसका अनुभव ही किया जा सकता है। यद्यपि बाद में आप स्वंय चक्रों की सच्ची आध्यात्मिक प्रकृति को सीखेंगे। प्रत्येक चक्रों में इसके साथ दृश्यमान प्रकाश के स्पेक्ट्रम का एक निश्चित सही रंग जुडा होता हैं जो लाल-पहले चक्र से वायलेट- सातवें तक। आप अब इसके बाद चक्रों में सही रंगों को समझने व देखने को भी सीखेंगे।

संख्या	नाम / स्थान	वर्ण	सही रंग
7	सिर के ऊपर ताज	आध्यात्मिक पूर्णता	पूर्णतः बैंगनी
6	माथे (तीसरा आँख)	विजुअलाइज़ेशन-मानसिक दृष्टि	नील
5	गला - कम्युनिकेशन की पिट	रचनात्मक अभिव्यक्ति	नीला
4	हार्ट	यूनिवर्सल लव - करुणा व सहानुभूति	हरा
3	सौर जाल	स्वयं का निर्माण, स्वयं की धारणा और प्रक्षेपण	पीला
2	सेक्यूलल (जघन)	इच्छा, जिसमें यौन ऊर्जा शामिल है	नारंगी
1	स्पाइन	शारीरिक जीवन शक्ति का आधार-जीवन रक्षा	लाल

चक्र- ऊर्जा के प्रसंस्करण केंद्र, ऊर्जा प्रवाह के बिंदु और ऊर्जा क्षेत्र में प्रमुख ऊर्जा जंक्शनों के रूप में कार्य करते हैं। उनके भीतर ऊर्जावान शक्ति का प्रवाह हैं जो हमारे शारीरिक, भावनात्मक, मानसिक और आध्यात्मिक जीवन के हर पहलू को संभव बनाते हैं। प्रत्येक चक्र हमेशा अपने भीतर ऊर्जा प्राप्त कर रहा है, और यह वह ऊर्जा है जो हमें हमारे चारों ओर के वातावरण से मिलती है और प्रत्येक व्यक्ति की संपूर्ण जीवन प्रक्रिया को आगे बढ़ाने में काम करती है। ऊर्जा का प्रवेश ऊर्जा के क्षेत्रों में, इन प्रत्येक सात प्रमुख चक्रों के माध्यम से होता है। पृथ्वी से ऊर्जा का प्रवाह ऊपर की तरफ होते हुए पहले चक्र, दूसरे चक्र आदि के साथ-साथ अन्ततः ऊपरी सातवें चक्र तक पहुंचती है। प्रत्येक चक्र में ऊर्जा उस चक्र की अनूठी प्रकृति के अनुसार संसाधित होती है। निचले चक्र सरल तरीके से क्रियाशील रहते हैं, परंतु जैसे जैसे ऊर्जा ऊपर की ओर बढ़ती है वहां से अधिक से जटिल, अधिक आध्यात्मिक कार्यशीलता, जीवन के गहन अनुभवों और व्यक्तिगत स्थितियों से गुजरती है।

किसी भी चक्र के माध्यम से ऊर्जा के प्रवाह में कोई दोष, न केवल शारीरिक रूप से शरीर के कुछ हिस्सों को प्रदान की जाने वाली ऊर्जा के नतीजे से होगा बल्कि उस चक्र से जुड़े हुये कुछ विशेष तरीकों के भावनाओं, मन और आत्मा को भी प्रभावित करेगा जो उस विशेष चक्र के प्रकृति और चरित्र से जुड़े, एक निश्चित चक्र में ऊर्जा क्षेत्र के कई अन्य हिस्सों को भी प्रभावित करेगा और इस प्रकार वे उस पूरे ऊर्जा क्षेत्र की ऊर्जा प्रक्रिया की क्षमता को भी कम कर देंगे। यह इसलिए है कि ऊर्जा क्षेत्र क्योंकि एक समग्र इकाई है जिससे प्रत्येक भाग हर दूसरे भाग को प्रभावित करता है। चक्र प्रणाली में आप जिस तरीके से अपने में अतिरिक्त ऊर्जा लाते हैं, उसी तरह आप इसे अपने रोगी में भेज सकते हैं। जब आप ऊर्जा में कॉल करते हैं, तो यह आपके अपने चक्र प्रणाली के माध्यम से प्रवेश करती है आपको पहली बार अपने पहले और 7वें चक्रों के माध्यम से पहली बार अतिरिक्त ऊर्जा प्राप्त होती है, लेकिन बाद में अभ्यास के साथ आप अपने सभी चक्रों से समान रूप से ऊर्जा खींचेंगे। जब आप ऊर्जा उपचार की क्रिया सीखते हैं तो आपके लिए इन सात-प्रमुख चक्रों के केंद्रीय महत्व का जनाना आवश्यक होंगा। फिर भी यहा यह दोहराना महत्वपूर्ण है कि आपके लिए इन चक्र प्रणाली की बौद्धिक समझ, आपके चिकित्सा कार्य में उपयोगी नहीं होगी। सच तो यह है कि ऊर्जा हीलर यह क्रिया अपने जागरूकता विस्तार और प्रत्येक चक्र के अनुभव को प्राप्त करने के लिए सीखता है। प्रत्येक चक्र अपनी प्रकृति और चेतना के साथ उन क्षेत्र मैं मौजूद है। जब आप ऊर्जा प्रवाह को ऊर्जा चक्र में प्रवाहित करना शुरू करते हैं और उन पर हाथों से गुजरने का अभ्यास करते हैं तब आप अपनी अनूठी प्रकृति की भावना व जागरूकता से प्रत्येक चक्र ऊर्जा देना शुरू करते हैं। यह एक सोच की प्रक्रिया ही नहीं है, बल्कि इसके द्वारा आप केवल अपने खुद को सीखने के लिये प्ररित करते हैं और अपने पूरे अस्तित्व को बढ़ाने मे सामर्थ्यवान होने की अनुमति देते हैं। साथ ही साथ, आप अपने रोगियों में भी प्रत्येक चक्र की स्थिति में कुछ अंतर्दृष्टि हासिल करना शुरू करते रहते हैं।

अगले अंक में हम जानने की कोशिश करेंगे कि प्रणिक ऊर्जा के उपचार स्तर-1 के मूल उपाय की रूपरेखा क्या होती है ?

अगला अंक- 9 अवश्य पढ़े..